vinetur

बार-बार के सूखे के बाद बोर्डो के वाइन उत्पादकों ने सिंचाई पर बहस फिर शुरू की

गर्म होती गर्मियों और कम पैदावार के चलते फ्रांस का सबसे बड़ा वाइन क्षेत्र सिंचाई पर लंबे समय से चली आ रही वर्जना पर फिर विचार कर रहा है।

मंगलवार, 6 अक्टूबर 2026



बोर्डो के वाइन उत्पादक फ्रांस के सबसे पारंपरिक वाइन क्षेत्रों में से एक में ऐसी बहस फिर शुरू कर रहे हैं, जिसे वर्षों तक लगभग अछूत माना जाता था : सूखे और बार-बार पड़ रही गर्मी की लहरों से बेलों और उत्पादकों पर बढ़ते दबाव के बीच क्या इस क्षेत्र के अंगूर बागों की सिंचाई की जानी चाहिए।

बोर्डो क्षेत्र में यह चर्चा जोर पकड़ रही है। यह देश का सबसे बड़ा नियंत्रित अपीलैशन वाला अंगूर उत्पादन क्षेत्र है। उत्पादक गर्म होती गर्मियों, घटती पैदावार और लंबे समय से जारी आर्थिक संकट का सामना कर रहे हैं, जिसके चलते हजारों हेक्टेयर जमीन पर उत्पादन पहले ही बंद हो चुका है। मौजूदा फसल से अच्छी गुणवत्ता की उम्मीद है, लेकिन बोर्डो के वाइन व्यापार समूह CIVB का कहना है कि उत्पादन कम रहेगा, क्योंकि अंगूरों के फूलने के लिए बारिश समय पर नहीं हुई।

पिछले साल गिरोंद में फसल पहले ही बहुत कम, 2.9 मिलियन हेक्टोलिटर, रही थी। इस विभाग में बोर्डो के अधिकांश अंगूर बाग आते हैं। सरकारी समर्थन से चलाए गए बेल हटाने के कार्यक्रम के कारण बड़े इलाके में बेलें उखाड़ी गई थीं। उत्पादकों का कहना है कि हाल के शुष्क मौसम ने इस चिंता को और बढ़ा दिया है कि क्षेत्र जलवायु परिवर्तन के अनुरूप कैसे ढले, बिना अपनी वाइन की पहचान को कमजोर किए या स्थानीय जल संसाधनों पर दबाव बढ़ाए।

फ्रांस में प्रकाशित खबरों के अनुसार, Syndicat des Bordeaux et Bordeaux Supérieurs के अध्यक्ष Stephane Gabard ने कहा, "हमने शायद ही कभी ऐसा सूखा देखा हो।" उनका संगठन स्थानीय उत्पादन के आधे से अधिक हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है।

गिरोंद के कृषि मंडल ने बार-बार पड़ रहे सूखे का हवाला देते हुए जुलाई में सिंचाई की समीक्षा शुरू की, जिसे उसने जरूरी बताया। उसके वाइन आयोग को अक्टूबर की शुरुआत में इस मुद्दे पर चर्चा करनी थी। यह बहस बोर्डो में रुख में आए स्पष्ट बदलाव को दर्शाती है। यहां लंबे समय से सिंचाई को लेकर संदेह रहा है, क्योंकि इससे टेरुआर की अभिव्यक्ति और जल संसाधनों की सुरक्षा पर असर पड़ने की चिंता है।

विभागीय कृषि मंडल के अध्यक्ष और Côtes de Bourg क्षेत्र के वाइन उत्पादक Jean-Samuel Eynard ने कहा कि बोर्डो के टेरुआर के कुछ हिस्सों में सिंचाई की जरूरत होगी, खासकर उन मिट्टियों में जो बहुत कम पानी रोक पाती हैं। उन्होंने कहा कि नई बेलें जमाने और मृत बेलों की जगह नई बेलें लगाने के लिए युवा बेलों को पानी देना जरूरी हो सकता है। उन्होंने उपचारित अपशिष्ट जल को एक संभावित स्रोत बताया।

वृद्धि के दौर में युवा बेलों को पानी देने की अनुमति पहले से ही अपवादस्वरूप दी जाती है। कुछ उत्पादक अब भीषण सूखे के समय सिंचाई की व्यापक अनुमति चाहते हैं। करीब 86,000 हेक्टेयर में फैले इस अंगूर उत्पादन क्षेत्र के लिए यह बड़ा बदलाव होगा, जिसने लंबे समय से बिना सिंचाई की खेती को अपनी पहचान का हिस्सा बताया है।

Eynard ने कहा कि कुछ परंपरावादियों में विरोध अब भी मजबूत है। उनके मुताबिक, अब सवाल यह है कि क्या उत्पादकों को हर विंटेज में मिलने वाली परिस्थितियों को स्वीकार कर लेना चाहिए, भले ही चरम मौसम अधिक बार आने लगे, या फिर परिस्थितियों के अनुरूप ढलना अपरिहार्य हो गया है।

पूर्वी गिरोंद के Saint-Quentin-de-Caplong में उत्पादक Rolland Grenouilleau ने कहा कि इस विषय को अब वर्जित नहीं माना जाना चाहिए। उन्होंने बताया कि Occitanie के कुछ हिस्सों समेत फ्रांस के अन्य वाइन क्षेत्रों में सिंचाई पहले से स्वीकार्य है। अनाज और भेड़ पालन करने वाले Grenouilleau ने कहा कि उनके 15 हेक्टेयर अंगूर बागों के लिए यह साल खास तौर पर कठिन रहा। उन्होंने हाल में 20 हेक्टेयर और बेलें उखाड़ी हैं।

उन्होंने कहा कि तापमान लगभग 45°C से 50°C तक पहुंच गया था, जो पौधों के लिए बेहद कठिन हालात हैं। उनके मुताबिक, बेलों को बहुत अधिक पानी की जरूरत नहीं होती, लेकिन मौसम निकालने, फसल देने और उत्पादकों को टिकाऊ आय मुहैया कराने के लिए न्यूनतम पानी जरूरी है।

Grenouilleau और कई पड़ोसी किसान पहाड़ी ढलान पर एक जलाशय बनाने पर विचार कर रहे हैं, जिसमें सर्दियों की बारिश का पानी जमा किया जा सके। उन्होंने कहा कि इस परियोजना से न केवल बेलों को मदद मिलेगी, बल्कि ऐसे समय में फसलों में विविधता लाने में भी सहायता होगी, जब बोर्डो में वाइन का अतिरिक्त उत्पादन गंभीर समस्या बन गया है।

Gabard ने कहा कि गिरोंद के Galgon में अपने अंगूर बागों में वे लंबे समय तक सिंचाई के विरोधी रहे। लेकिन बार-बार आए बेहद शुष्क और गर्म वर्षों ने चर्चा का रुख बदल दिया है, खासकर उन बजरी वाली मिट्टियों में जहां से पानी तेजी से निकल जाता है। उन्होंने कहा कि इस व्यापक सार्वजनिक सवाल को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि अंगूर बागों में मीठे पानी का इस्तेमाल सामाजिक रूप से स्वीकार्य होगा या नहीं।

व्यापक सिंचाई के आलोचकों के लिए यह सवाल केंद्रीय महत्व रखता है। गिरोंद के गहरे जलभृतों की निगरानी करने

वाली परामर्शी संस्था Smegreg ने चेतावनी दी है कि इसके लिए बेहद बड़ी मात्रा में पानी चाहिए होगा। उसका अनुमान है कि अगर अंगूर बागों के सभी 86,000 हेक्टेयर क्षेत्र में हर साल प्रति हेक्टेयर 1,500 घन मीटर की दर से सिंचाई की जाए, तो इसके लिए विभाग के 1.7 मिलियन निवासियों को पीने का पानी देने के वास्ते हर साल निकाले जा रहे 110 मिलियन घन मीटर से भी अधिक पानी लगेगा। संस्था के अनुसार, पानी की यह मौजूदा निकासी भी ऐसे जलभृत तंत्र से हो रही है जिसका जरूरत से ज्यादा दोहन किया जा चुका है।

Adour-Garonne जल एजेंसी ने अभी तक इस मुद्दे पर औपचारिक चर्चा नहीं की है, लेकिन उसने संकेत दिया है कि यह विषय उसकी अगली बेसिन समिति बैठक के एजेंडे में होना चाहिए। इस समिति में पानी के सभी उपयोगकर्ताओं का प्रतिनिधित्व है। बैठक दिसंबर में होनी है।

हालांकि, संभावित जरूरत का पैमाना खुद विवाद का विषय है। Bordeaux Sciences Agro में अंगूर उत्पादन के प्रोफेसर Cornelis van Leeuwen ने कहा कि सूखे की अत्यधिक मार झेलने वाले खेत बोर्डो के अंगूर बागों के 10% से भी कम हैं और क्षेत्र में कुल मिलाकर अब भी पर्याप्त बारिश होती है। उनके विचार में, बोर्डो में सिंचाई जरूरी नहीं है, क्योंकि उत्पादकों के पास अन्य तरीकों से अनुकूलन की काफी गुंजाइश है।

Van Leeuwen ने कहा कि इन विकल्पों में पौध सामग्री बदलना शामिल है, खासकर ऐसी अंगूर किस्मों और रूटस्टॉक का इस्तेमाल करना जो अधिक गर्म और शुष्क परिस्थितियों के अनुकूल हों। नई किस्मों के परीक्षण पहले से चल रहे हैं। उन्होंने कहा कि अगर सबसे अधिक जोखिम वाले खेतों में सही संयोजन के साथ दोबारा पौधे लगाए जाएं, तो सिंचाई की जरूरत नहीं रह सकती।

शोधकर्ताओं और उत्पादकों, दोनों के लिए यह विवाद खेती की तकनीक से कहीं आगे का है। बोर्डो की प्रतिष्ठा इस विचार पर बनी है कि उसकी वाइन जगह, जलवायु और हर विंटेज के अंतर को दर्शाती हैं। कुछ उत्पादकों को चिंता है कि नियमित सिंचाई से यह मॉडल धुंधला पड़ जाएगा या क्षेत्र के पर्यावरण संबंधी दावे कमजोर होंगे, ऐसे समय में जब उपभोक्ता पानी के इस्तेमाल और टिकाऊपन पर अधिक ध्यान दे रहे हैं।

दूसरों का कहना है कि यह सवाल अब दार्शनिक नहीं, बल्कि व्यावहारिक होता जा रहा है। जलवायु परिवर्तन, घटती खपत, कमजोर कीमतों और अंगूर बागों को हटाए जाने के कारण क्षेत्र पहले से दबाव में है। इस स्थिति में कुछ उत्पादकों का तर्क है कि सिंचाई पर विचार करने से इनकार करने पर बोर्डो के कुछ हिस्सों में खेती जारी रखना मुश्किल हो सकता है, खासकर वहां जहां मिट्टी जल्दी सूख जाती है और युवा बेलों का बच पाना कठिन होता है।

जलवायु के और गर्म होने के साथ दबाव बढ़ने की आशंका है। फिलहाल, बोर्डो ने सिंचाई को उस तरह नहीं अपनाया है, जैसा स्पेन, इटली या नई दुनिया के कुछ अंगूर बागों ने किया है। लेकिन जिस क्षेत्र में कभी इस विचार का लगभग सर्वसम्मति से विरोध होता था, वहां अब प्रमुख उद्योग समूहों, स्थानीय अधिकारियों और स्थापित उत्पादकों का इस पर खुलकर चर्चा करना एक महत्वपूर्ण बदलाव है। Van Leeuwen ने कहा कि अगर बोर्डो किस्मों और रूटस्टॉक के जरिए अनुकूलन कर सके, तो पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार उत्पादक के रूप में अपनी पहचान पेश करने की उसकी स्थिति बेहतर होगी।